अमर उजाला
मंगलवार 02.02.2021 05
kanpur.amarujala.com

बजट अच्छा, आत्मनिर्भर बनने की ओर भारत

बजट में कई स्कूलों को खोलने, उनको अपग्रेड करने की बात कही गई है। इस घोषणा की शैक्षणिक संस्थाओं के संचालकों, शिक्षाविदों ने तारीफ की है। कृषि के लिए दिए गए पैकेज से कृषि शिक्षा के साथ खेती-किसानी में भी काफी लाभ पहुंचने की संभावनाएं बताई जा रही हैं।

बजट काफी अच्छा है, शिक्षा किसी भी देश की नींव होती है। बजट में कई स्कूलों को खोलने, उनको अपग्रेड करने की बात कही गई है, जो काफी सराहनीय है। आत्मनिर्भर बनने की बात केवल हवा हवाई नहीं है बल्कि पॉलिसी पर भी ध्यान दिया गया है। **-गौरव भदौरिया, संयुक्त सचिव, महाराणा प्रताप ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूंश**

इस बार बजट में हेल्थ सेक्टर पर अधिक निवेश किया गया है, जो वास्तव में जरूरी भी था। हेल्थ सेक्टर, बुजुर्गों, साफ सफाई का विशेष ध्यान दिया गया है। बुजुर्गों को टैक्स रिबेट से छूट दी गई है, जो काफी सराहनीय है। इसके बेहद सधा हुआ बजट कह सकते हैं। **-डॉ. प्रणव सिंह, निदेशक, रामा मेडिकल कॉलेज एंड यूनिवर्सिटी**

इस समय आत्मनिर्भर और स्वास्थ्य सेवाओं पर फोकस करने की जरूरत थी, इस बजट में दोनों पर ही विशेष ध्यान दिया गया है। जहां एक ओर वैक्सीन की रिसर्च के लिए 35 हजार करोड़ रुपये दिए गए हैं, वहीं दूसरी ओर नेशनल हाईवे को दुरुस्त करने पर फोकस किया गया है। शिक्षा और शोध पर भी ग्रांट दी गई है। **-प्रो. नीलिमा गुप्ता, वीसी, सीएसजेएमयू**

बैलेंस बजट है, इसके दूरगामी परिणाम काफी अच्छे होंगे। इससे इंडस्ट्री, कोऑपरेट को फायदा मिलेगा। आम आदमी हो सकता है कि स्लैब न बढ़ने की वजह से थोड़ा मायूस होगा, लेकिन इकॉनामी बहुत जल्दी ट्रैक पर आ जाएगी। सब लोगों का बजट का स्वागत करना है। **- सीए अमर ओमर**

बजट में सरकार ने स्वास्थ्य सेवाओं को खासी तवज्जो दी है। इसके लिए बजट में 137 फीसदी के इजाफे से देश में स्वास्थ्य सेवाएं बेहतर होंगी। स्वास्थ्य सुविधाओं के मामले में देश आत्मनिर्भर बनेगा। निश्चित तौर पर इसका लाभ शहर को भी मिलेगा। **- निर्मला सिंह वाइस चेयरपर्सन पीएसआईटी**

सरकार ने ऐसा बजट पेश किया, जिससे आम जन पर कोई दवाब नहीं पड़ रहा है। स्वास्थय और शिक्षा को लेकर बजट में अच्छे प्रावधान हैं। कृषि के लिए 16.50 लाख करोड़ का पैकेज देकर देश के किसानों को सौगात दी है। नई शिक्षा नीति के तहत नए कॉलेज खुलेंगे, जिसमें देश का युवा शिक्षित होकर देश के विकास में अपना सहयोग करेगा। **-डॉ. डीआर सिंह, सीएसए कुलपति**

आज

कानपुर 2 फरवरी 2021 3

कोरोना काल में बेहतर बजट

कानपुर। सीएसए, गृह विभाग की डा. मिथलेश वर्मा का कहना है कि आज के बजट में कृषि से लेकर उद्योग, एमएसएमई सहित कई महत्वपूर्ण चीजों का ख्याल रखा गया है जिसमें किसानों के लिए बजट में काफी हिस्सा रखा गया, जोकि कृषि के लिए काफी हद तक बेहतर होगा। उनका कहना है कि कोरोना काल में आम आदमी या व्यापार पर किसी तरह का नया टैक्स नहीं थोपा गया, इसलिए कोरोना काल में बेहतर बजट है।

किसानों को मिले डीजल में सब्सिडी

कानपुर, 1 फरवरी। सीएसए, शाकभाजी, डा. संजीव सचान का कहना है कि बजट में सड़कों और कृषि के लिए बहुंच कुछ रखा गया है। सड़कें होने पर किसान बाहरी मंडी तक आसानी से उपज बेच कर लाभ कमायेंगा। यूपी के किसानों को निर्यात को बढ़ावा दें। साथ ही किसानों के लिए डीजल में सब्सिडी जरूर मिलनी चाहिये।

News Expert
11 hrs · Facebook for Android ·

प्रकाश संश्लेषण कम होने से पड़ता है असर जलीय जीवो पर
कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर.सिंह के निर्देश के क्रम में आज मत्स्य प्रभारी डॉ आनंद स्वरूप श्रीवास्तव ने मत्स्य उत्पादकों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि सर्दियों में कोहरे एवं बादल की वजह से मत्स्य तालाबों में समुचित सूर्य का प्रकाश नहीं मिल पाता है। जिसके कारण जलीय पौधों द्वारा प्रकाश संश्लेषण की क्रिया कम हो जाती है। परिणाम स्वरूप तालाब के जल में घुलित ऑक्सीजन की कमी हो जाती है। डॉक्टर श्रीवास्तव ने बताया कि मत्स्य तालाबों में ऑक्सीजन की मात्रा 5 पीपीएम आवश्यक होती है। ऐसी स्थिति में मत्स्य पालक जब तालाब में देखें की मछलियां ऊपर की सतह पर आकर अपना मुंह पानी के ऊपर निकाल रही हैं।तो मत्स्य पालक को समझ लेना चाहिए की पानी में ऑक्सीजन की कमी हो गई है। उन्होंने बताया कि ऐसी स्थिति में पानी को डंडे से पीटकर या मानव श्रम द्वारा पानी में उथल-पुथल करने से वातावरण की ऑक्सीजन पानी में घुल जाती है। ताजे पानी के फव्वारे के रूप में तालाब में डालने से ऑक्सीजन की कमी से बचा जा सकता है। विषम परिस्थितियों में ऑक्सीजन का संतुलन बनाने हेतु लाल दवा (पोटैशियम परमैग्नेट) तालाब में के जल में मिलाना चाहिए। उन्होंने बताया कि सर्दियों के मौसम में धूप की कमी से दूसरी समस्या तालाबों में एल्गल ब्लूम की है। इसमें तालाब का पानी अत्यधिक हरे रंग का हो जाता है और उसमें एलगी बहुतायत मात्रा में हो जाती है जिसके कारण मछलियां की मृत्यु होने लगती है। ऐसी स्थिति में जाल चलाकर एलगी का निवारण करना चाहिए तथा चूने का प्रयोग वैज्ञानिक या विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार प्रयोग कर पानी के पीएच मान को 7.5 निर्धारित रखना चाहिए। इस प्रकार एलगी का नियंत्रण हो जाएगा। सर्दियों के मौसम में मछलियों की बढ़ोतरी कम होती है क्योंकि मछलियों के बढ़वार के लिए तालाब के पानी का तापमान 25 से 30 डिग्री है ऐसे में उन्होंने लोगों को सलाह दी है कि पानी की आपूर्ति फव्वारेके रूप में करते रहें जिससे मछलियों की बढ़वार लगातार जारी रहे। (डॉ खलील खान), मीडिया प्रभारी, चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर।

सीएसए के मत्स्य प्रभारी ने मत्स्य उत्पादकों हेतु जारी की एडवाइजरी

02/02/2021

कानपुर(विशाल प्रदेश)चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ0 डी.आर. सिंह के निर्देश के क्रम में मत्स्य प्रभारी डॉ0 आनंद स्वरूप श्रीवास्तव ने मत्स्य उत्पादकों हेतु एडवाइजरी जारी की है उन्होंने बताया कि सर्दियों में कोहरे एवं बादल की वजह से मत्स्य तालाबों में समुचित सूर्य का प्रकाश नहीं मिल पाता है जिसके कारण जलीय पौधों द्वारा प्रकाश संश्लेषण की क्रिया कम हो जाती है परिणाम स्वरूप तालाब के जल में घुलित ऑक्सीजन की कमी हो जाती है डॉ0 श्रीवास्तव ने

बताया कि मत्स्य तालाबों में ऑक्सीजन की मात्रा 5 पीपीएम आवश्यक होती है ऐसी स्थिति में मत्स्य पालक जब तालाब में देखें की मछलियां ऊपर की सतह पर आकर अपना मुंह पानी के ऊपर निकाल रही हैं तो मत्स्य पालक को समझ लेना चाहिए की पानी में ऑक्सीजन की कमी हो गई है उन्होंने बताया कि ऐसी स्थिति में पानी को डंडे से पीटकर या मानव श्रम द्वारा पानी में उथल-पुथल करने से वातावरण की ऑक्सीजन पानी में घुल जाती है ताजे पानी के फव्वारे के रूप में तालाब में डालने से ऑक्सीजन की कमी से बचा जा सकता है विषम परिस्थितियों में ऑक्सीजन का संतुलन बनाने हेतु लाल दवा (पोटैशियम परमैग्नेट) तालाब में के जल में मिलाना चाहिए उन्होंने बताया कि सर्दियों के मौसम में धूप की कमी से दूसरी समस्या तालाबों में एलगल ब्लूम की है इसमें तालाब का पानी अत्यधिक हरे रंग का हो जाता है और उसमें एलगी बहुतायत मात्रा में हो जाती है जिसके कारण मछलियां की मृत्यु होने लगती है ऐसी स्थिति में जाल चलाकर एलगी का निवारण करना चाहिए तथा चूने का प्रयोग वैज्ञानिक या विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार प्रयोग कर पानी के पीएच मान को 7.5 निर्धारित रखना चाहिए। इस प्रकार एलगी का नियंत्रण हो जाएगा सर्दियों के मौसम में मछलियों की बढ़ोतरी कम होती है क्योंकि मछलियों के बढ़वार के लिए तालाब के पानी का तापमान 25 से 30 डिग्री है ऐसे में उन्होंने लोगों को सलाह दी है कि पानी की आपूर्ति फव्वारेके रूप में करते रहें जिससे मछलियों की बढ़वार लगातार जारी रहे

ऑक्सीजन का संतुलन के लिए लाल दवा (पोटैशियम परमैग्नेट) तालाब के जल में मिलाना चाहिए

शाश्वत टाइम्स कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर.सिंह के निर्देश के क्रम में आज मत्स्य प्रभारी डॉ आनंद स्वरूप श्रीवास्तव ने मत्स्य उत्पादकों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि सर्दियों में कोहरे एवं बादल की वजह से मत्स्य तालाबों में समुचित सूर्य का प्रकाश नहीं मिल पाता है। जिसके कारण जलीय पौधों द्वारा प्रकाश संश्लेषण की क्रिया कम हो जाती है। परिणाम स्वरूप तालाब के जल में घुलित ऑक्सीजन की कमी हो जाती है। डॉक्टर श्रीवास्तव ने बताया कि मत्स्य तालाबों में ऑक्सीजन की मात्रा 5 पीपीएम आवश्यक होती है। ऐसी स्थिति में मत्स्य पालक जब तालाब में देखें की मछलियां ऊपर की सतह पर आकर अपना

मुंह पानी के ऊपर निकाल रही हैं।तो मत्स्य पालक को समझ लेना चाहिए की पानी में ऑक्सीजन की कमी हो गई है। उन्होंने बताया कि ऐसी स्थिति में पानी को डंडे से पीटकर या मानव श्रम द्वारा पानी में उथल-पुथल करने से वातावरण की ऑक्सीजन पानी में घुल जाती है। ताजे पानी के फव्वारे के रूप में तालाब में डालने से ऑक्सीजन की कमी से बचा जा सकता है। विषम परिस्थितियों में ऑक्सीजन का संतुलन बनाने हेतु लाल दवा (पोटैशियम परमैग्नेट) तालाब में के जल में मिलाना चाहिए। उन्होंने बताया कि सर्दियों के मौसम में धूप की कमी से दूसरी समस्या तालाबों में एल्गल ब्लूम की है। इसमें तालाब का पानी अत्यधिक हरे रंग का हो जाता है और उसमें एलगी बहुतायत मात्रा में हो जाती है जिसके कारण मछलियां की मृत्यु होने लगती है। ऐसी स्थिति में जाल चलाकर एलगी का निवारण करना चाहिए तथा चूने का प्रयोग वैज्ञानिक या विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार प्रयोग कर पानी के पीएच मान को 7.5 निर्धारित रखना चाहिए। इस प्रकार एलगी का नियंत्रण हो जाएगा। सर्दियों के मौसम में मछलियों की बढ़ोतरी कम होती है क्योंकि मछलियों के बढ़वार के लिए तालाब के पानी का तापमान 25 से 30 डिग्री है ऐसे में उन्होंने लोगों को सलाह दी है कि पानी की आपूर्ति फव्वारेके रूप में करते रहें जिससे मछलियों की बढ़वार लगातार जारी रहे।

मत्स्य उत्पादकों हेतु एडवाइजरी जारी

सर्दियों में कोहरे की वजह से मत्स्य तालाबों में समुचित सूर्य का प्रकाश नहीं मिलता- डॉ. स्वरूप

सांध्य हलचल ब्यूरो

कानपुर। सीएसए के कुलपति डॉ. डी.आर.सिंह के निर्देश के क्रम में मत्स्य प्रभारी डॉ. आनंद स्वरूप श्रीवास्तव ने मत्स्य उत्पादकों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि सर्दियों में कोहरे एवं बादल की वजह से मत्स्य तालाबों में समुचित सूर्य का प्रकाश नहीं मिल पाता है। जिसके कारण जलीय पौधों द्वारा प्रकाश संश्लेषण की क्रिया कम हो जाती है। परिणाम स्वरूप तालाब के जल में घुलित ऑक्सीजन की कमी हो जाती है। डॉ. श्रीवास्तव ने बताया कि मत्स्य तालाबों में ऑक्सीजन की मात्रा 5 पीपीएम आवश्यक होती है। ऐसी स्थिति में मत्स्य पालक जब तालाब में देखें की मछलियां ऊपर की सतह पर आकर अपना मुंह पानी के ऊपर निकाल रही हैं।तो मत्स्य पालक को समझ लेना चाहिए की पानी में ऑक्सीजन की कमी हो गई है। उन्होंने बताया कि ऐसी स्थिति में पानी को डंडे से पीटकर या मानव श्रम द्वारा पानी में उथल-पुथल करने से वातावरण की ऑक्सीजन पानी में घुल जाती है। ताजे पानी के फव्वारे के रूप में तालाब में डालने से ऑक्सीजन की कमी से बचा जा सकता है। विषम परिस्थितियों में ऑक्सीजन का संतुलन बनाने हेतु लाल दवा (पोटैशियम परमैग्नेट) तालाब में के जल में मिलाना चाहिए। उन्होंने बताया कि सर्दियों के मौसम में धूप की कमी से दूसरी समस्या तालाबों में एल्गल ब्लूम की है। इसमें तालाब का पानी अत्यधिक हरे रंग का हो जाता है और उसमें एलगी बहुतायत मात्रा में हो जाती है जिसके कारण मछलियां की मृत्यु होने लगती है। ऐसी स्थिति में जाल चलाकर एलगी का निवारण करना चाहिए तथा चूने का प्रयोग वैज्ञानिक या विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार प्रयोग कर पानी के पीएच मान को 7.5 निर्धारित रखना चाहिए। इस प्रकार एलगी का नियंत्रण हो जाएगा। सर्दियों के मौसम में मछलियों की बढ़ोतरी कम होती है क्योंकि मछलियों के बढ़वार के लिए तालाब के पानी का तापमान 25 से 30 डिग्री है ऐसे में उन्होंने लोगों को सलाह दी है कि पानी की आपूर्ति फव्वारेके रूप में करते रहें जिससे मछलियों की बढ़वार लगातार जारी रहे।

पहचान बनी। इसी बात का ध्यान में रखते हुए ही भविष्य में हमें कार्य करना है। राष्ट्रीय संरक्षक, डॉ उमेश पालीवाल ने बताया कि सिर्फ 2 वर्ष में संगठन ने देश भर में सराहनीय कार्य किया है। इसके लिए संगठन का प्रत्येक सदस्य बधाई का पात्र है। जिन्होंने दिन रात मेहनत करके संगठन को इस ऊंचाई पर पहुंचा दिया। इसके लिए उन्होंने सभी को धन्यवाद दिया। अधिवेशन के समापन सत्र में मुख्य वक्ता के रूप पधारे प्रख्यात पत्रकार चिंतक डॉ अनिल ओक ने भारतीय

आध्यात्म के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य कर रहे विद्वान जिनमें डॉ राजेश श्रीवास्तव, यशभान सिंह तोमर, विजयलक्ष्मी भट्ट शर्मा, सिधांशु राय, महेंद्र कुमार, को माँ भारती सेवा सम्मान प्रदान किया गया।

इस अवसर पर प्रांतीय स्तर पर विशिष्ट कार्य करने वाली महिलाएं जिनमें सीमा ढींगरा, मंजुला गुप्ता, अंजली अग्रवाल, डॉ वैशाली कुंतल, रश्मि श्रीवास्तव, डॉ मधु प्रधान, डॉ माहेतलत सिद्दकी, उमा जैन, कल्पना

विमल कुमार, डॉ ... तिवारी, को राष्ट्र सेवक सम्मान से सम्मानित किया गया। मंच संचालन डॉ रचना पाण्डेय ने किया, में श्री गोपाल तुलस्यान, अलका सिंह व संजय कुमार मिश्रा, ने भी अपने विचारों से कार्यकर्ताओं को मार्गदर्शन प्रदान किया यहां पंकज श्रीवास्तव, मनोज कुमार पाल, अशोक कुमार गुप्ता, डॉ अलका सक्सेना, डॉ अनिता निगम, रूचि त्रिवेदी आदि उपस्थित रहे।

मत्स्य उत्पादकों हेतु एडवाइजरी जारी की

• सर्दियों में कोहरे की वजह से मत्स्य तालाबों में समुचित सूर्य का प्रकाश नहीं मिलता– डॉ. स्वरूप

कानपुर, 1 फरवरी (निस)। सीएसए के कुलपति डॉ. डी.आर.सिंह के निर्देश के क्रम में मत्स्य प्रभारी डॉ. आनंद स्वरूप श्रीवास्तव ने मत्स्य उत्पादकों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि सर्दियों में कोहरे एवं बादल की वजह से मत्स्य तालाबों में समुचित सूर्य का प्रकाश नहीं मिल पाता है। जिसके कारण जलीय पौधों द्वारा प्रकाश संश्लेषण की क्रिया कम हो जाती है। परिणाम स्वरूप तालाब के जल में घुलित ऑक्सीजन की कमी हो जाती है। डॉ. श्रीवास्तव ने बताया कि मत्स्य तालाबों में ऑक्सीजन की मात्रा 5 पीपीएम आवश्यक होती है। ऐसी स्थिति में मत्स्य पालक जब तालाब में देखें की मछलियां ऊपर की सतह पर आकर अपना मुंह पानी के ऊपर निकाल रही हैं तो मत्स्य पालक को समझ लेना चाहिए की पानी में ऑक्सीजन की कमी हो गई है। उन्होंने बताया कि ऐसी स्थिति में पानी को डंडे से पीटकर या मानव श्रम द्वारा पानी में उथल-पुथल करने से वातावरण की ऑक्सीजन पानी में घुल जाती है। ताजे पानी के फव्वारे के रूप में तालाब में डालने से ऑक्सीजन की कमी से बचा जा सकता है। विषम परिस्थितियों में ऑक्सीजन का संतुलन बनाने हेतु लाल दवा (पोटैशियम परमैगनेट) तालाब में के जल में मिलाना चाहिए। उन्होंने बताया कि सर्दियों के मौसम में धूप की कमी से दूसरी समस्या तालाबों में एलगल ब्लूम की है। इसमें तालाब का पानी अत्यधिक हरे रंग का हो जाता है और उसमें एलगी बहुतायत मात्रा में हो जाती है जिसके कारण मछलियों की मृत्यु होने लगती है। ऐसी स्थिति में जाल चलाकर एलगी का निवारण करना चाहिए तथा चूने का प्रयोग वैज्ञानिक या विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार

प्रयोग कर पानी के पीएच मान को 7.5 निर्धारित रखना चाहिए। इस प्रकार एलगी का नियंत्रण हो जाएगा। सर्दियों के मौसम में मछलियों की बढ़ोतरी कम होती है क्योंकि मछलियों के बढ़वार के लिए तालाब के पानी का तापमान 25 से 30 डिग्री है ऐसे में उन्होंने लोगों को सलाह दी है कि पानी की आपूर्ति फव्वारोंके रूप में करते रहें जिससे मछलियों की बढ़वार लगातार जारी रहे।

बाजार, सेंसेक्स 2,315 अंक उछला

छोटी कंपनियों में भी लिवाली का जोर रहा।

बीएसई का मिडकैप 3.03 प्रतिशत चढ़कर 18,630.31 अंक पर और स्मॉलकैप 2.03 प्रतिशत की बढ़त के साथ 18,353.32 अंक पर

पहुंच गया। बीएसई के सभी समूह हरे निशान में रहे। बैंकिंग समूह का सूचकांक 8 प्रतिशत, वित्त समूह का 7 प्रतिशत और रियल्टी का 6 प्रतिशत से अधिक चढ़ा। सेंसेक्स की 30 कंपनियों में से 27 के शेयर हरे निशान में रहे। इंडसइंड बैंक का शेयर 15 प्रतिशत के करीब, आईसीआईसीआई बैंक का 12 प्रतिशत, बजाज फिनसर्व का 11 प्रतिशत और भारतीय स्टेट बैंक का 10 प्रतिशत से अधिक चढ़ा। डॉ. रेड्डीज लैब में करीब पौने 4 प्रतिशत से अधिक की गिरावट रही।

विदेशों में भी औसतन तेजी रही। एशिया में दक्षिण कोरिया का कोस्पी 2.70 प्रतिशत, हांगकांग का हैंगसेंग 2.15 प्रतिशत, जापान का निक्की 1.55 प्रतिशत और चीन का शंघाई कंपोजिट 0.64 प्रतिशत चढ़ गया। यूरोप में शुरुआती कारोबार में जर्मनी का डैक्स 1.08 प्रतिशत और ब्रिटेन का एफटीएसई 0.57 प्रतिशत मजबूत हुआ।

सेंसेक्स 332.18 अंक की बढ़त में 46,617.95 अंक पर खुला और पूरे दिन हरे निशान में रहा। इसका दिवस का निचला स्तर 46,433.65 अंक रहा। बजट पेश होने के बाद इसका ग्राफ लगातार ऊपर की ओर बढ़ता गया। कारोबार की समाप्ति से पहले 48,764.40 अंक तक चढ़ने के बाद अंत में गत दिवस के मुकाबले 2,314.84 अंक ऊपर 48,600.61 अंक पर बंद हुआ। बीएसई में कुल 3,129 कंपनियों के शेयरों में कारोबार हुआ। इनमें 1,942 कंपनियों के शेयर हरे निशान में और 991 के लाल निशान में बंद हुए जबकि शेष 196 कंपनियों के शेयर दिनभर के उतार-चढ़ाव के बाद अंततः अपरिवर्तित रहे।

निफ्टी 124 अंक की तेजी के साथ 13,758.60 अंक पर खुला। इसका दिवस का उच्चतम स्तर 14,336.35 अंक और न्यूनतम स्तर 13,661.75 अंक रहा। अंत में यह गत दिवस की तुलना में 646.60 अंक की बढ़त में 14,281.20 अंक पर बंद हुआ। निफ्टी की 50 में से 45 कंपनियों के शेयर चढ़े और शेष 5 के लाल निशान में रहे।

वर्ष-7 अंक-330 कानपुर, मंगलवार 2 फरवरी 2021 पृष्ठ-8

कानपुर से प्रकाशित दैनिक

आज का कानपुर

"सत्य का आधार"

डाक पंजीयन संख्या : K.P.City-323/2018-20

RNI No : UPHIN/2014/55306

कानपुर से प्रकाशित लखनऊ, उन्नाव, सीतापुर, लखीमपुर खीरी, हमीरपुर, महोबा, बांदा, फतेहपुर, प्रयागराज, इटावा, कन्नौज, गाजीपुर, कानपुर देहात, बाराबंकी में प्रसारित

सीएसए के मत्स्य प्रभारी ने मत्स्य उत्पादकों हेतु जारी की एडवाइजरी

आज का कानपुर

कानपुर (चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ0 डी.आर. सिंह के निर्देश के क्रम में मत्स्य प्रभारी डॉ0 आनंद स्वरूप श्रीवास्तव ने मत्स्य उत्पादकों हेतु एडवाइजरी जारी की है उन्होंने बताया कि सर्दियों में कोहरे एवं बादल की वजह से मत्स्य तालाबों में समुचित सूर्य का प्रकाश नहीं मिल पाता है जिसके कारण जलीय पौधों द्वारा प्रकाश संश्लेषण की क्रिया कम हो जाती है परिणाम स्वरूप तालाब के जल में घुलित ऑक्सीजन की कमी हो जाती है डॉ0 श्रीवास्तव ने बताया कि मत्स्य तालाबों में ऑक्सीजन की मात्रा 5 पीपीएम आवश्यक होती है ऐसी स्थिति में मत्स्य पालक जब तालाब में देखें की मछलियां ऊपर की सतह पर आकर अपना मुंह पानी के ऊपर निकाल रही है तो मत्स्य पालक को समझ लेना चाहिए की पानी में ऑक्सीजन की कमी हो गई है उन्होंने बताया कि ऐसी स्थिति में पानी को डंडे से पीटकर या मानव श्रम द्वारा पानी में उथल-पुथल करने से वातावरण की ऑक्सीजन पानी में घुल जाती है ताजे पानी के फव्वारे के रूप में तालाब में डालने से ऑक्सीजन की कमी से बचा जा सकता है विषम परिस्थितियों में ऑक्सीजन का संतुलन बनाने हेतु लाल दवा (पोटैशियम परमैग्नेट) तालाब में के जल में मिलाना चाहिए उन्होंने बताया कि सर्दियों के मौसम में धूप की कमी से दूसरी समस्या तालाबों में एल्गल ब्लूम की है इसमें तालाब का पानी अत्यधिक हरे रंग का हो जाता है और उसमें एल्गी बहुतायत मात्रा में हो जाती है जिसके कारण मछलियां की मृत्यु होने लगती है ऐसी स्थिति में जाल चलाकर एल्गी का निवारण करना चाहिए तथा चूने का प्रयोग वैज्ञानिक या विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार प्रयोग कर पानी के पीएच मान को 7.5 निर्धारित रखना चाहिए। इस प्रकार एल्गी का नियंत्रण हो जाएगा सर्दियों के मौसम में मछलियों की बढ़ोतरी कम होती है क्योंकि मछलियों के बढ़वार के लिए तालाब के पानी का तापमान 25 से 30 डिग्री है ऐसे में उन्होंने लोगों को सलाह दी है कि पानी की आपूर्ति फव्वारेके रूप में करते रहें जिससे मछलियों की बढ़वार लगातार जारी रहे।

पानी में उथल-पुथल करके मछलियों को बचा सकते हैं मत्स्य पालक

जन एक्सप्रेस संवाददाता

02/02/2021

कानपुर नगर। सर्दी के मौसम में होने वाले कोहरे और बादल के कारण मत्स्य तालाबों में सूर्य का प्रकाश ठीक से ना पहुंचने से जलीय पौधों के द्वारा प्रकाश संश्लेषण की क्रिया कम हो जाने से तलाब के जल में घुलित ऑक्सीजन कम हो जाती है जबकि मत्स्य तालाबों में ऑक्सीजन की मात्रा 5 पीपीएम होनी चाहिए ऐसे में मछलियां ऊपर की सतह पर आकर अपना मुंह बाहर निकालती है यह बात सीएसएयू के कुलपति डॉ. डी. आर. सिंह के निर्देश के क्रम मे सोमवार को मत्स्य प्रभारी डॉ. आनंद स्वरूप श्रीवास्तव ने मत्स्य उत्पादकों के लिए जारी की एडवाइजरी मे कही। उन्होंने बताया कि पानी में ऑक्सीजन की मात्रा कम होने पर मत्स्य पालक को पानी को डंडे से पीटकर या मानव श्रम द्वारा पानी में उथल-पुथल करनी चाहिए जिससे वातावरण की ऑक्सीजन पानी में घुल जाए तथा विषम परिस्थितियों में ऑक्सीजन का संतुलन बनाने के लिए लाल दवा (पोटैशियम परमैग्नेट) का प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने बताया कि सर्दियों के मौसम में तालाबों में होने वाली दूसरी समस्या एल्गल ब्लूम है जो धूप की कमी से होती है जिसमें तालाब का पानी हरे रंग का हो जाता है और मछलियों की मृत्यु होने लगती है। ऐसी स्थिति में जाल चलाकर एलगी का निवारण करना चाहिए तथा चूने का प्रयोग वैज्ञानिक या विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार करना चाहिए।

कानपुर, 2 फरवरी, 2021

ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि के लिए मजबूत होगा बुनियादी ढांचा

आम बजट पूरी तरह से किसानों के लिए हितों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। इसमें जहां कृषि क्षेत्रों में तकनीक बढ़ेगी, वहीं बुनियादी ढांचे को मजबूत किया जा सकेगा। सरकार ने बजट में किसानों की आय बढ़ाने के साथ ही उनकी समस्याओं को दूर करने का प्रयास किया है। जैविक खेती के इस्तेमाल को बढ़ावा देकर अतिरिक्त खर्च के भार को कम किया गया। इसके साथ पीएम कुसुम स्कीम से किसानों को सोलर पंप का तोहफा मिला है। जहां पर खेती नहीं हो रही है, वहां पर सौर ऊर्जा प्रोजेक्ट लगाया जाएगा।

सीएसए के प्रो. एचजी प्रकाश ने बजट पर रखी राय • जागरण

सबसे बड़ी समस्या सब्जियों और अन्य फसलों के भंडारण की रहती है। इसमें फसलों के सड़ने, गलने और कीड़ा लगने की समस्या शामिल हैं। बजट में ग्रामीण और संरचना विकास कोष की राशि को 30 हजार करोड़ से बढ़ाकर 40 हजार करोड़ रुपये कर दी गई है। इससे फसलों और सब्जियों के लिए नए कोल्ड स्टोरेज खोले जा सकेंगे। इसके साथ ही गांवों में कई तरह की कृषि योजनाएं लाई जा सकेंगी। किसानों के लिए खास तरह के स्कूल खुल पाएंगे।

कानपुर | हिन्दुस्तान

कानपुर, मंगलवार 02 फरवरी 2021 | 05

कृषि विशेषज्ञ बोले

ग्रीन उत्पादों की संख्या को बढ़ाना सबसे अच्छा फैसला

ऑपरेशन ग्रीन स्कीम के तहत अब तक केवल मटर, प्याज, आलू फसल पर लागू थी। अब इसे बढ़ाकर 22 और ग्रीन उत्पादों को शामिल किया गया है।

-डॉ. एचजी प्रकाश, शोध निदेशक सीएसए

माइक्रो इरीगेशन के बजट में अच्छा प्रावधान होने के कारण कृषि सिंचाई में प्रयोग होने वाले पानी की बचत होगी व किसानों को लाभ मिलेगा। बीज उत्पादन में वृद्धि होगी।

-डॉ. सीपी सचान, वैज्ञानिक सीएसए